पालन–पोषण शैली बालकों के विकास को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व

प्राप्तिः 19.08.2026
स्वीकृतः 11.09.2026

75

रुबीना खातून
शोधार्थिनी (शिक्षक शिक्षा विभाग)
दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय
मुरादाबाद
ईमेलः *rubinashafi68@gmail.com*

डॉ0 सुषमा
असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षक शिक्षा विभाग)
दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय
मुरादाबाद
ईमेलः *sushma030@gmail.com*

सारांश

आधुनिक समय में बालकों का सर्वांगीण विकास करने के लिए माता–पिता को पालन–पोषण शैली के विषय में ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त पालन–पोषण शैली का चयन न कर पाने के कारण माता–पिता दोनों को बालकों के सही (सर्वांगीण) विकास में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। माता की गोद व्यक्ति की प्रथम पाठशाला होती है अतः माता–पिता को बालक के सामने स्वयं का एक ऐसा चरित्र प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे बालक उसका अनुकरण करके एक अच्छा मनुष्य एवं समाज के लिए एक जिम्मेदार नागरिक बन सके। माता–पिता को अपने अन्दर उन गुणों का समावेश करना होग, जिसका प्रदर्शन वे अपने बालकों के अन्दर देखना चाहते हैं।

मुख्य शब्द

सर्वांगीण विकास, पालन–पोषण शैली, अनुकरण, चरित्र

प्रस्तावना

व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास पालन–पोषण शैली के द्वारा बहुत प्रभावित होता है। पालन–पोषण शैली उस विधि को कहते हैं जिसके अनुसार बालक के माता–पिता उसके साथ व्यवहार करते हैं। आधुनिक युग में बालकों का उपयुक्त सर्वांगीण विकास की समस्या समाज के समक्ष प्रस्तुत है। अतः तेजी से बदलते इस युग में पालन–पोषण शैली पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पालन–पोषण शैली का चयन करने के लिए माता–पिता को पालन–पोषण शैलियों का ज्ञान होना आवश्यक है।

पालन–पोषण शैली के प्रकारः– मुख्य रूप में 4 प्रकार के पालन–पोषण शैली का अधिक महत्व है– सत्तावादी, आधिकारिक, अनुज्ञानात्मक, एवं उदासीन। प्रत्येक शैली की अपनी विशेषताएँ

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.075

हैं। अधिकतर माता–पिता द्वारा किसी एक प्रकार की शैली नहीं अपितु विभिन्न प्रकार की शैलियों की विशेषताओं का प्रयोग किया जाता है।

1. सत्तावादी पालन–पोषण शैली– सत्तावादी पालन–पोषण शैली में माता–पिता बालकों के साथ व्यवहार करते हुए केवल अपनी बात बालकों को बता देना ही बहुत समझते हैं वे बालकों के साथ संवाद करने या उनकी सोच–समझ या उनकी बात को कोई महत्व नहीं देते हैं। सत्तावादी पालन–पोषण शैली में माता–पिता अपने सख्त नियमों का पालन बालकों से करने की अपेक्षा करते हैं, जिन नियमों के कारण वे बालकों को बताते भी नहीं हैं, इस शैली में माता–पिता की अपेक्षाएं उच्च होती है, सही व्यवहार न करने पर बालकों को दण्ड दिया जाता है।

पालन–पोषण शैली द्वारा बालकों का विकास इस प्रकार प्रभावित होता है कि वे दण्ड मिलने के डर के कारण उचित व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। परन्तु इस शैली के अनेक दुष्प्रभाव बालकों के विकास पर पड़ते हैं, वे आक्रामक व्यवहार का प्रदर्शन कर सकते हैं, उनमें आत्मसम्मान की कमी होती है, जो उसके निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है।

2. अधिकार–पूर्ण पालन–पोषण शैली– अधिकार–पूर्ण पालन–पोषण शैली में माता–पिता अपनी अपेक्षाएँ एवं नियम निर्धारित करने के कारण बालकों को स्पष्ट तौर पर समझाते हैं। माता–पिता एवं बालकों के मध्य स्नेहपूर्ण एवं घनिष्ठ सम्बन्ध होते हैं। माता–पिता एवं बालकों के मध्य अर्थपूर्ण संवाद होता है जिसके माध्यम से लक्ष्य एवं अपेक्षाएं निर्धारित करने में बालकों की सलाह ली जाती है।

अधिकारपूर्ण पालन–पोषण में बालकों को प्रदान की गयी स्वतंत्रता बालकों को लक्ष्य प्राप्त करने योग्य बनाती है तथा बालकों में आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास का विकास करती है जो जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने में उनकी मदद करता है वे अपने–आपको महत्वपूर्ण समझते हैं तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं उनका शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास उचित प्रकार से हो पाता है।

3. अनुमेय पालन–पोषण शैलीः– इस पालन–पोषण शैली में माता–पिता उदारवादी होते हैं वे अपने बालकों को स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं एवं किसी भी प्रकार के नियम नहीं बनाते हैं वे यह समझते हैं कि बालक अपने अनुभव से स्वयं सीख सकते है। इस शैली में माता–पिता बालकों के मित्रों के समान व्यवहार करते हैं।

इस शैली के कुछ नकारात्मक प्रभाव सामने आ सकते हैं इस प्रकार से पालन–पोषण करने के कारण बालकों का नियमों को न मानने वाला, अपनी इच्छानुसार कार्य न होने पर उग्र हो जाने वाला एवं आत्मसंयन की कमी वाला व्यक्तित्व सामने आता है यह व्यक्ति जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना सफलता–पूर्वक नहीं कर पाते है।

4. उदासीन पालन–पोषण शैलीः– इस शैली में माता–पिता बालकों को कोई विशेष महत्व प्रदान नहीं करते हैं उनमें स्नेह का अभाव पाया जाता है, वे कोई नियम नहीं बनाते हैं। इस प्रकार से परवरिश किये गये बालकों में आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान की कमी पायी जाती है तथा इनमें आत्मनिर्भरता का गुण पाया जाता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

1. नियारकी एवं रहीमी (2013):– ने अपना शोध अध्ययन ''पालन पोषण शैली का आत्म संप्रत्तय, मनोवैज्ञानिक स्वस्थ्यता एवं जीवन गुणवत्ता पर प्रभाव'' का अध्ययन पर किया। शोध से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पालन–पोषण शैली का मनोवैज्ञानिक स्वस्थ्यता एवं आत्म–संप्रत्यय पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। शोध से यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि पालन–पोषण शैली का सार्थक प्रभाव जीवन की गुणवत्ता पर पड़ता है।

2. डायरी एट ऑल (2010) ने अपना शोध अध्ययन विभिन्न प्रकार की पालन–पोषण शैली, मानसिक स्वास्थ्य एवं संस्कृती पर किया। यह पार संस्कृति के विषय में 5 वाँ शोध अध्ययन है जो दर्शाता है कि बालकों की मनोवैज्ञानिक समायोजन एवं पालन–पोषण शैली में संबंध है। शोध का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि विभिन्न संस्कृतियों में मनोवैज्ञानिक अस्वस्थता चर एवं पालन–पोषण के कारक नियंत्रण, असंगति एवं अस्वीकारता किस प्रकार संबंधित है।

3. मुहम्मद, जी (2007) ने शोध अध्ययन किया जिसके अन्तर्गत पालन–पोषण शैली, पारिवारिक वातावरण एवं किशोरावस्था में समृद्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन सम्मिलित किया। शोध से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 41.1 प्रतिशत किशोरों के माता–पिता आधिकारिक पालन–पोषण शैली का प्रयोग करते हैं। 34.6 प्रतिशत किशोरों के माता–पिता सत्तावादी पालन–पोषण शैली को अपनाया गया तथा 24.3 प्रतिशत किशोरों के लिए अनुमतिवादी पालन–पेाषण शैली प्रयोग किया गया।

चुनौतियाँ

1. बालकों का भावनात्मक विकासः– निरन्तर बदलते इस युग में जीवन इतना व्यस्त हो गया कि मनुष्य के पास अपने भावों को समझने का समय नहीं है। बालकों का पालन–पोषण करने के लिए माता–पिता को भावनात्मक रूप से परिपक्व होना आवश्यक है। माता–पिता द्वारा भावनात्मक अपरिपक्वता का प्रदर्शन बालकों के भी भावनात्मक विकास को प्रभावित कर रहा है।

2. मानसिक विकास का अभावः– यदि बालक भावनात्मक रूप से परिपक्व नहीं हो पाता है, तब उसका मानसिक विकास भी प्रभावित होता है। अनेक प्रकार के मानसिक रोग इस कारण उत्पन्न होते हैं।

3. समानुभूति का अभावः– आज के इस युग में समानुभूति का अभाव बालकों के अन्दर पाया जा रहा है, वह दूसरों की परिस्थिति को उस प्रकार नहीं समझ पाता जिस प्रकार समझना चाहिए।

4. मधुर संबंधों का अभावः– आज मनुष्य स्वकेन्द्रित हो गया है, जिसके कारण मधुर संबंध स्थापित करना बहुत कठिन हो गया है।

5. आत्मसम्मान का अभावः– सही प्रकार से पालन–पोषण न हो पाने के कारण बालकों में आत्म सम्मान की भावना का अभाव पाया जाता है। वह अपने को महत्वपूर्ण नहीं समझ पाता है।

6. आत्मविश्वास का अभावः– बालकों के अन्दर आत्म विश्वास का अभाव पाया जा रहा है तथा वे दूसरों व्यक्तियों पर भी विश्वास नहीं कर पाते हैं।

7. निर्णय लेने की क्षमता का अभावः– जिन बालकों का पालन–पोषण सही प्रकार नहीं हो पाता है उनमें किसी भी प्रकार का निर्णय करने में अक्षमता पायी जाती है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.075

8. कृतज्ञता का अभावः– जीवन के सौन्दर्य को अनुभव करने के लिए मनुष्य के अन्दर कृतज्ञता का बोध होना आवश्यक है। आज बालकों के अन्दर कृतज्ञता का अभाव पाया जा रहा है! उनके जीवन में उनके पास जो कुछ है वो उनके लिए काफी नहीं हो पा रहा है, वे सदैव एक कमी का अनुभव करते हैं।

9. समाजिकता का अभावः– बालकों में सामाजिकता का अभाव पाया जा रहा है। समाज के साथ अब व्यक्ति उचित संबंध बनाने में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं।

सुझाव

बालको के समुचित विकास करने के लिए माता–पिता को पालन–पोषण करते समय जिन सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए उनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

1. **विभिन्न पालन–पोषण शैलियों का ज्ञानः–** माता–पिता को विभिन्न प्रकार की पालन पोषण–पोषण शैलियों का उचित ज्ञान होना आवश्यक है। माता–पिता को विभिन्न प्रकार की पालन–पोषण शैलियों के परिणाम का ज्ञान होना आवश्यक है।
2. **मात–पिता का संवेगात्मक परिपक्वता प्रदर्शित करनाः–** बालकों का पालन–पोषण करने को लिए माता–पिता का संवेगात्मक परिपक्व होना आवश्यक है। बालक अधिकतर अपने माता–पिता का अनुकरण करते हैं, वे अपने माता–पिता के व्यवहार का अवलोकन करते हैं। यदि माता–पिता भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यवहार का प्रदर्शन करेंगे, तब बालक भी वैसा ही व्यवहार करना सीखेंगे।
3. **स्नेहपूर्ण वातावरणः–** घरेलू वातावरण मनुष्य की मनोवैज्ञानिक स्थिति को बहुत प्रभावित करता है। यदि घर में स्नेहपूर्ण वातावरण हो, परिवार के प्रत्येक सदस्यों के मध्य स्नेहपूर्ण सम्बन्ध हो, तब बालक के अन्दर आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान की भावना विकसित होती है।
4. **नियम एवं मूल्यों का महत्व समझानाः–** माता–पिता को अपने परिवार के नियम एवं मूल्यों का पालन करना चाहिए तथा बालकों को उन नियम एवं मूल्यों का महत्व समझाना चाहिए।
5. **स्वतन्त्र वातावरण प्रदान करनाः–** माता–पिता को बालकों को स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिए, बालकों के जीवन से संबंधित पहलुओं में उनकी राय ली जानी चाहिये, इससे उनके अन्दर निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है एवं वे आत्मनिर्भर बनते हैं।

निष्कर्ष

बालकों के विकास में माता–पिता द्वारा अपनीयी गयी पालन–पोषण शैली का उनकी मनोवैज्ञानिक स्थिति पर बहुत प्रभाव पड़ता है, जो उनकी जीवन की सफलता को प्रभावित करता है अतः माता–पिता को बच्चों का पालन–पोषण विशेष सावधानियों को ध्यान में रखकर करना चाहिए। जिन बालकों का उचित पालन–पोषण होता है वे मनोवैज्ञानिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से स्वस्थ होते हैं तथा अपने जीवन को सफलतापूर्वक व्यतीत करते हैं।

संदर्भ

1. Dwairy, M., Achovi, M, Filus, A., Rezvan nia, P., casullo, M.M., & Vohra, N. (2010) parenting, Mental Health & culture; A fifth cross-cultural research on

parenting and psychological adjustment of children journal of child and family studies, 19, Pg. **36-41**.

2. Mohamadou, G. (2007) The relationship between family environment, parenting style and adolescent well-being in cameroon doctoral dissertation Universiti Putra Malaysia)
3. Niaraki, R. F., Rahimi, H. (2013) the impact of authoritative, permissive and authoritarian behaviour of parents on self-concept, psychological health & life quality, European online journal of natural social sciences, 2(1), Pg. **78.**
4. Masud H, Ahmad MS, Cho KW, Fakhr Z. Parenting Styles and Aggression Among Young Adolescents: A Systematic Review of Literature. Community Ment Health J. 2019 Aug;55(6): Pg. **1015-1030**. [PubMed]
5. Pong SL, Johnston J, Chen V. Authoritarian Parenting and Asian Adolescent School Performance: Insights from the US and Taiwan. Int J Behav Dev. 2010 Jan;34(1): Pg. **62-72**. [PMC free article] [PubMed]
6. Langer SL, Crain AL, Senso MM, Levy RL, Sherwood NE. Predicting child physical activity and screen time: parental support for physical activity and general parenting styles. J Pediatr Psychol. 2014 Jul;39(6): Pg. **633-42**. [PMC free article] [PubMed]
7. Leeman RF, Patock-Peckham JA, Hoff RA, Krishnan-Sarin S, Steinberg MA, Rugle LJ, Potenza MN. Perceived parental permissiveness toward gambling and risky behaviors in adolescents. J Behav Addict. 2014 Jun;3(2): Pg. **115-23**. [PMC free article] [PubMed]
8. Nijhof KS, Engels RC. Parenting styles, coping strategies, and the expression of homesickness. J Adolesc. 2007 Oct;30(5): Pg. **709-20**. [PubMed]